— प्रथम अध्याय —

"श्रीलाल शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय"

श्रीलाल शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय

व्यक्तित्व :-

श्रीलाल शुक्ल वर्तमान हिन्दी साहित्य के व्यंग्यकारों में अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्यात्मक उपन्यासों की परम्परा में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। अपने साहित्यिक जगत् में उन्होंने व्यंग्य का सहारा अधिक लिया। व्यंग्य के माध्यम से समाज के विविध समस्याओं का शुक्ल जी ने पर्दाफाश किया। उनकी अधिकतर रचनाएँ व्यंग्यात्मक ही दिखाई देती हैं।

श्रीलाल शुक्ल जी का जन्म दिसम्बर, १९२५ ई॰ में लखनऊ जिल्हे के "अतरौली" नामक गाँव में हुआ। प्रयाग विश्वविद्यालय में कला में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद शुक्ल जी ने सरकारी नौकरी में प्रवेश किया। सन १९५३-५४ में बुंदेलखंड में सरकारी नौकरी करते हुए उन्होंने एक व्यंग्यात्मक लेख लिखा — "स्वर्णग्राम और वर्षा" जो "निकष" में छपकर लोकप्रिय हुआ। सन १९५५ से आपने नियमित लेखन की शुरूवात की।

साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त व्यंग्यकार एवं उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल ने आत्म-परिचय देते हुए "सारिका" (अगस्त, १९७५) के "गर्दिश के दिन" शीर्षक स्तंभ में लिखा है —

> " अभावग्रस्त बचपन, मेहनत और चिंताओं से भरा विद्यार्थी जीवन, बाद में मंझोली हैसियत की एक सरकारी नौकरी अपने इन अनुभवों की कहानी सुनाना बेकार है, क्योंकि इस तरह की कहानियाँ बहुत बासी है और बहुत बार दोहरायी जा चुकी हैं। " [१]

बी॰ए॰ के जब छात्र थे, तब केशवचंद्र वर्मा, धर्मवीर भारती, विजयदेव साही सर्वेश्वर, गिरिधर गोपाल, जगदीश गुप्त आदि के सम्पर्क में आये। उन्होंने बी॰ए॰ के बाद एम॰ए॰ और लॉ करना चाहा लेकिन कर न सके और शादी कर ली —

"क्योंकि मुझे यकीन था कि जो पत्नी मिल रही है, वह मेरे लिए सबसे अच्छी पत्नी है।"

अपनी लेखन प्रक्रिया के संबंध में शुक्ल जी ने लिखा है --

" शहर में रहते हुए भी लिखने के लिए मुझे वह सब करना पड़ता है जो विवाहित लोग अपनी प्रेयसी के लिए करते है। यानी कई साल वीराने में मैंने मोटार की सीट का इस्तेमाल किया है, डाक बंगलों और होटलों में कमरे रिझर्व कराये है और काफी समय तक एक दुसरा फ्लैट किराये पर लिए रखा है। वैसे खास तौर से उपन्यास लिखते समय मुझे लंबी छुट्टियाँ लेकर दुसरी जगहों के लिए भागना पड़ता है। यह सब इसलिए भी करना पड़ता है कि, लेखन मेरे लिए बड़ी मेहनत और एकाग्रता का काम है और एक ही चीज मुझे सामान्यतया चार-चार, पाँच-पाँच बार लिखनी पड़ती है। इस सब में मेरा जितना खर्च होता है, वह मेरी छोटी रायल्टी के एक बड़े हिस्से को सोखने के लिए काफी है।" [२]

सरकारी नौकरी में रहकर शासन व्यवस्था पर प्रहार करना आसान नहीं है। शुक्ला जी को इस समस्या का सामना बराबर करना पड़ा है। उन्हीं के शब्दों में, -- "राग-दरबारी" के प्रकाशन के समय इस बाहरी प्रतिबंध का मुझे गहराई से अनुभव हुआ था और वह केवल उत्तरप्रदेश शासन की सदाशयता थी कि मेरे लिए नौकरी छोड़ना लाजिमि नहीं हुआ।

निष्कर्षत: :-

कहा जा सकता है कि, साहित्य के अनन्त गगन मंडल में कितने ही महान कलाकार उदित होते है और अस्त हो जाते हैं परन्तु कोई-कोई ऐसा व्यक्तित्व देखने में आता है जिसके देदीप्यमान प्रकाश से सम्पूर्ण साहित्यिक जगत् आलोकित हो उठता हैं। श्रीलाल शुक्ल बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार तथा व्यंग्यकार हैं। उनका

व्यक्तित्व विविधमुखी है। शुक्ल जी की साहित्य-साधना में उनकी औपन्यासिक कृतियों का विशिष्ट महत्व है, क्योंकि कलाकार के युग-चितेरे व्यक्तित्व की झाँकी कृतियों के दर्पण में ही निहारी जा सकती है।

इसतरह उन्हें उनके जीवन में स्थिरता बहुत देर में प्राप्त हुई। आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के बावजूद और नोकरी में व्यस्त रहते हुए भी वे किसी-न-किसी प्रकार से साहित्य की सेवा करते है। उनकी नौकरीयों का क्षेत्र अधिकतर साहित्य से संबंधित ही दिखाई देता हैं। उनकें साहित्य में उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं।

<u>कृतित्व</u> :-

साहित्य के अनन्त गगन मंडल में कितने ही महान कलाकार उदित होते हैं और अस्त हो जाते हैं परन्तु कोई-कोई ऐसा व्यक्तित्व देखने में आता हैं जिसके देदीप्यमान प्रकाश से सम्पूर्ण साहित्यिक जगत् आलोकित हो उठता है। बहुमखी प्रतिभा के धनी और उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल जी का ऐसा ही समृध्द व्यक्तित्व है। उनका व्यक्तित्व विविध पहलुओं से धुल-मिल गया है। वर्तमान काल के व्यंग्यकारों में उन्हें विशिष्ट स्थान है। अपने उपन्यासों में उन्होंने व्यंग्य का अधिक सहारा लिया। समाज की हर परिस्थिति को शुक्ल जी ने व्यंग्य का विषय बनाया।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के व्यंग्यात्मक उपन्यासों की परम्परा का नया मार्ग श्रीलाल शुक्ल ने प्रस्तुत किया। शुक्ल जी ने अपनी रचनाओं में अनुभव के सत्य को अधिक स्थान दिया। उनके व्यंग्य लेखों का तथा उपन्यासों का विषय सामाजिक हैं। समाज की इस परिस्थिति को उन्होंने व्यंग्य का विषय बनाया। उनके उपन्यासों लें अधिकतर सामाजिक जीवन का ही चित्रण मिलता हैं। उनके व्यंग्य लेखों तथा उपन्यासों के विषय सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, परिवारिक तथा शैक्षणिक हैं।

इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश के प्रत्येक क्षेत्र की उथल-पुथल पुरातन, अधुनातन का द्वंद्व, घुटन, अनैतिकता, संस्कारहीनता, स्वार्थपरता, मूल्यहीनता, आधुनिक बुध्दिजीवी की अकर्मण्यता, पतोन्मुखता को शुक्ल जी ने अपने साहित्य का विषय बनाया। श्रीलाल शुक्ल जी के लेखन में हास्य और व्यंग्य का अद्भुत समन्वय मिलता है। आपका क्षेत्र बहुत व्यापक है और वह जिंदगी की हर कुंठा, हर विषमता और हर कुटिलता पर मुक्त भाव से मीठा प्रहार (व्यंग्य) करता है।

श्रीलाल शुक्ल जी ने १९५३-५४ में सर्वप्रथम एक व्यंग्यात्मक लेख लिखा - "स्वर्णग्राम और वर्षा" जो "निकष" नामक पत्रिका में छपकर लोकप्रिय हुआ। यहीं से व्यंग्य लेखन की शुरुवात हुई। श्रीलाल शुक्ल जी ने अपने नियमित रूप से लेखन कार्य सन १९५५ से किया। उन्हें अपने लेखन कार्य में डॉ॰ धर्मवीरभारती, केशवचंद्र वर्मा, गिरिधर गोपाल, जगदीश गुप्त से अधिक प्रेरणा मिली। उन साहित्यकारों से प्रेरणा लेकर शुक्ल जी ने उपन्यास लेखन को प्रारंभ किया।

उनका सर्वप्रथम उपन्यास "सुन्नी घाटी का सुरज" डॉ॰ धर्मवीर भारती और केशवचंद्र वर्मा की प्रेरणा से किताब महल से प्रकाशित हुआ। उपन्यास लिखने के साथ-साथ शुक्ल जी ने व्यंग्य निबंधों का लेखन भी किया। उनका व्यंग्य-निबंधों का पहला संग्रह "अंगद का पाँव" भारतीय ज्ञानपीठ से पुरस्कृत हुआ। "अंगद का पाँव" इस व्यंग्य लेखसंग्रह का प्रकाशन १९५० में हुआ। तब से अनन्त प्रवाह से शुक्ल जी ने लेखन कार्य को जारी रखा और अब तक लिखते रहे।

इस प्रकार श्रीलाल शुक्ल जी के "अंगद का पाँव" और "यहाँ से वहाँ" दो व्यंग्य लेखसंग्रह प्रकाशित हुए। उनके बहुचर्चित उपन्यासों में -- "सुनी घाटी का सुरज", "राग दरबारी", "आदमी का जहर", "सिमाएँ टूटती है", "मकान" तथा "अज्ञातवास" प्रसिध्द है।

इस प्रकार श्रीलाल शुक्ल जी ने व्यंग्य लेख तथा उपन्यास आदि विधाओं में साहित्य सृजण आरम्भ किया और निरन्तर साहित्य साधना में जुटा रहकर अनेक मौलिक कृतियों को जन्म दिया।

शुक्ल जी के साहित्य का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है।

व्यंग्य-संग्रह :-

१) अंगद का पाँव :-

(मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ — १९५०)

"अंगद का पाँव" व्यंग्य निबंध लेखसंग्रह का प्रकाशन १९५० में हुआ। "मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ" में यह निबंध संकलित है। विशेषतः शुक्ल जी ने समाज की हर स्थिति कोअपने व्यंग्य का विषय बनाया हैं। उनके लेखो में व्यंग्य अधिक चुभता हुआ दिखाई देता हैं। पाठकों को असलियत का पता बता देता है, जिसके कारण पाठक तिल-माल कर जागृत हो उठते है। वर्तमान काल के समाज में खोखले तथा ढोंगी विचारों का स्थान अधिक मिलता हैं। लोग अंधविश्वास के कारण इन खोखले तथा ढोंगी विचारोंपर विश्वास रखते है। शुक्ल जी ने "अंगद का पाँव" इस निबंध में बिदाई रस्म की खोखली तथा अनौपचारिकता पूर्ण रिवाज पर करारा व्यंग्य किया है। बिदाई रस्म आज बहुत खोखली और औपचारिकता पूर्ण हो गई है। प्रस्तुत निबंध में लेखकने इस ओर संकेत किया है कि, अफसर और उसको बिदा देने के लिए स्टेशन पर पहुँचे असके मातहतों के बीच दिखावटी स्नेह एवं आदर का चित्रण करते हुए लेखक ने पूरी अफसरशाही का चित्रण करते हुए लेखकने पूरी अफसरशाही संस्कृतिपर प्रहार किया हैं। वहाँ पर होने वाले मित्रों के परस्पर वार्तालाप, अफसर के प्रति मिथ्या आत्मिकता पूर्ण भाव व्यक्त करनेवाले संवाद और फिर गाडी का समय हो जानेपर भी उसके न छुटने से होनेवाली उकताहट, सब कुछ ऐसे संबंधों के ठेंडेपन को व्यक्त करता हैं।

इस निबंध में लेखकने रामायण काल को अंगद का उदाहरण दे दिया है। राम का दुत अंगद जिसने रावण की सभा में जाकर अपना पैर जमाने हुए चुनौती दी कि यदि कोई मेरा पाँव धरती से हटा दे तो राम सीता को हार जाएँगे। लेकिन अंगद के पाँव को कोई हटा नहीं पाया।

इसप्रकार श्रीलाल शुक्ल जी ने इस व्यंग्य लेख में बिदाई रस्म और उसके कारण बनावटी स्नेह दिखानेवालोंपर गहरा व्यंग्य प्रहार किया है। "मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ" लेखसंग्रह में शुक्ल जी ने समाज की विविध स्थितियों को लेकर उसके बनावटी तथा ढोंगी प्रवृत्तिपर करारा व्यंग्य किया है।

२) <u>यहाँ से वहाँ</u> :--

श्रीलाल शुक्ल जी का "यहाँ से वहाँ" एक व्यंग्यलेखों का संग्रह है। इस व्यंग्य-संग्रह में अनेक लेख संकलित हैं। इस संग्रह में भी शुक्ल जी ने "सामाजिकता" को ही अपने व्यंग्य का विषय माना है। समाज के हर स्थिति को व्यंग्य के माध्यम से ही प्रस्तुत किया है। वर्तमानकालीन सामाजिक विषमताओं का तथा समस्याओं का लेखा - जोखा "यहाँ से वहाँ" इस व्यंग्य लेखसंग्रह में प्रस्तुत किया है।

३) <u>उमराव नगर में कुछ दिन</u> :--

इसीतरह शुक्ल जी का "उमराव नगर में कुछ दिन" एक प्रसिध्द व्यंग्य-संग्रह है।

<u>श्रीलाल शुक्ल जी के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय</u> :-

१) सूनी घाटी का सूरज (१९५७ इ.)
२) मकान (१९७६)
३) सीमाएँ टूटती है (१९७३ इ.)
४) आदमी का जहर (१९७४ इ.)
५) अज्ञातवास
६) राग -दरबारी (१९६९ इ.)

१) सूनी घाटी का सूरज :-

"सूनी घाटी का सूरज" श्रीलाल शुक्ल जी का पहला उपन्यास हैं। वह उपन्यास डॉ॰ धर्मवीर भारती और केशवचंद्र वर्मा की प्रेरणा से "किताबमहल", इलाहाबाद से १९५७ई. में प्रकाशित किया हैं। शुक्ल जी के उपन्यास लेखन का कार्य वहीं से प्रारंभ हुआ। शुक्ल जी ने इस उपन्यास को डॉ॰ धर्मवीर भारती और केशवचंद्र वर्मा को समर्पित किया।

इस उपन्यास में शुक्ल जी ने रामदास के जीवन की विविध घटनाओं का सफल चित्रण किया हैं। उपन्यास को आठ भागों में विभाजित किया है। उपन्यास के तत्वों की दृष्टिसे वह उपन्यास सफल है। इस उपन्यास को "चरित्रप्रधान उपन्यास" की कोटी में रखा जाता है। इसका कारण वह है कि, रामदास के जीवन में घटीत अनेक विविध घटनाओं का उतार-चढाव लेखक ने प्रस्तुत किया हैं।

रामदास और सत्या का उपन्यासकारने सफल चरित्र-चित्रण किया है।

इसप्रकार "सूनी घाटी का सूरज" इस उपन्यास में श्रीलाल शुक्लाजी ने युग के आकर्षण, अतीत की प्रताड़ना और वर्तमान की निराशा को सही रूप में प्रस्तुत किया है।

२) मकान :-

श्रीलाल शुक्लजी का "मकान" एक सफल चरित्र-प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन "राधा-कृष्ण", दरियागंज, नई दिल्ली से १९७६ में किया हैं।

इस उपन्यास को अनेक भागो में विभाजित किया है। चरित्र-प्रधान उपन्यास होने के कारण "नारायण" का सफल चरित्र-चित्रण किया है। नारायण के जीवन की विविध घटनाओं का चित्रण इस उपन्यास में किया है। इस उपन्यास में १९७४ संवत की घटनाओं का चित्रण अधिक किया है।

"मकान" यह उपन्यास डायरी शैली में लिखा है। इसमें "नारायण" और उसका "मकान" तथा उस मकान में विविध घटनाक्रमों का सही चित्रण शुक्ल जी ने किया है। उस मकान में नारायण की हत्या कैसे हुई और बाद में उसके परिवार ने प्रतिष्ठा कैसे प्राप्त की इसका सही चित्रण है।नारायण एक संगीतज्ञ है।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि, मकान इस उपन्यास में संगीतज्ञ नारायण की इस विशेषता को लेकर पत्र-पत्रिकाओं में कई लेख निकले और रसज्ञ आलोचकोंने इस बात को विशेषज्ञों की भाषा में शास्त्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

३) सीमाएँ टूटती हैं :-

"सीमाएँ टूटती हैं" -- श्रीलाल शुक्ल जी का प्रसिध्द उपन्यास है। शुक्ल जी के इस उपन्यास का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से १९७३ में किया गया है। यह उपन्यास श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा को शुक्ल जी ने सादर किया है। उपन्यास में मानव जीवन की विविध घटनाओं को स्थान दिया है। यह उनका एक सफल सामाजिक उपन्यास है। शुक्ल जी ने विविध घटनाओं को लेकर सीमाएँ कैसी टूटती है - इसका विवेचन दे दिया है।

एक दृष्टीसे इस उपन्यास को चरित्र-प्रधान उपन्यास की कोटी में भी रखा जाता है। इस उपन्यास के पात्र निम्न है। उपन्यासकारने पात्रों के चरित्र-चित्रण की ओर अधिक ध्यान दिया है।

१) विमल -- दिल्ली का एक व्यवसायी। दुर्गाराम नामक रेडिओं, ग्रामोफोन आदि के एक दुकानदार का मित्र। विदुर - आयु - ४७ वर्ष।

२) चाँद -- दुर्गादास की पुत्री, केमिस्ट्री की शोधछात्रा - आयु - २३ वर्ष।

३) राजनाथ -- दुर्गादास का पुत्र। पिता के व्यवसाय का सहयोगी, आयु - २८ वर्ष।

४) नीला -- राजनाथ की पत्नी।

५) तारानाथ -- दुर्गादास का पुत्र। आयु - ३२ वर्ष।

६) शंकर — सम्पन्न कृषक, तारानाथ का मित्र। आयु - ३५ वर्ष।

७) चुली — एक दफ्तर की टायपिस्ट। आयु - ३० वर्ष।

८) डॉ॰ फडके — जेल के सुपरिटेन्डेट।

९) प्रोफेसर — समाजशास्त्र का प्रोफेसर ।

इसप्रकार विविध चरित्रों को लेकर शुक्ल जी अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल बन गए है। उपन्यास की तत्वों की दृष्टि से उनका यह उपन्यास प्रसिध्द है।

४) आदमी का जहर :-

श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा लिखित "आदमी का जहर" यह उपन्यास एक सफल सामाजिक तथा राजनीतिक उपन्यास है। इसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा १९७४ में किया।

"आदमी का जहर" एक रहस्यपूर्ण अपराध कथा है। इसकी शुरुवात एक ईर्षालु पति से होती है, जो छिपकर अपनी स्वपती पत्नी का पीछा करता है और एक होटल के कमरे में आकर उसके साथी को गोली मार देता है। पर दूसरे ही दिन यह साधारण दीखनेवाला हत्याकांड अचानक असाधारण बन जाता है और घटना को रहस्य की घनी परछाइयाँ ढकने लगती है।

उसके बाद के पन्नो में हत्या और दूसरे भयंकर अपराधों का घना अंधेरा है जिसकी कई पर्तों से हम पत्रकार उमाकांत के साथ गुजरते है। घटनाओं का तनाव बराबर बढ़ता जाता है। अंत में जिस अप्रत्यक्षित बिंदूपर टूटता है, वह नाटकीय होते हुए भी पूरी तरह विश्वसनीय है।

सामान्य पाठक समुदाय के लिए हिन्दी में शायद पहली बार श्रीलाल शुक्ल ने ऐसा उपन्यास लिखा है। इसमें पारंपारिक जासुसी कथा साहित्य की खूबियाँ तो मिलेगी ही, अबसे बड़ी खूबी यह है कि कथा आज की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों के बीच से निकली है।

इसप्रकार कहा जा सकता है कि, "आदमी का जहर" यह उपन्यास, जिसे उपन्यासकार खुद मनोरंजन भर मानता है। पाठकों का मनोरंजन तो करेगा ही, उन्हें कुछ सोचने के लिए भी मजबूर करेगा।

५) <u>अज्ञातवास</u> :-

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "अज्ञातवास" उनका एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें इतिहासकालीन घटनाओं को लेकर वर्तमानकालीन समस्यापर प्रकाश डाला है।

इस उपन्यास में पात्र तथा घटनाओं की ओर उपन्यासकारने अधिक ध्यान दिया है। उपन्यास की तत्वों की दृष्टिसे यह उपन्यास सफल है।

६) <u>राग-दरबारी</u> :-

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" उनका एक सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है। "राग-दरबारी" को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। "राग-दरबारी" जैसे एक व्यंग्यात्मक उपन्यास अन्यत्र दुर्लभ है। "राग-दरबारी" भारतीय विविध सामाजिक समस्याओं का दस्तावेज है। "राग-दरबारी" का प्रकाशन - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वारा १९६८ मे प्रकाशित किया गया।

"राग-दरबारी" के लेखन काल के संबंध में शुक्ल जी ने कहा है —

" "राग-दरबारी" की शुरूआत १९६० के आसपास हुई। पर उस वक्त मुझे इसकी संरचना या स्वरूप का पता न था, यह तक तय नहीं कि मेरे दिमाग में इसकी विधा भी स्पष्ट थी या नहीं और शीर्षक तो मुझे १९६७ के अंततक नहीं मिल पाया, अपनी हर किताब के शीर्षक की तरह "राग-दरबारी" का अविष्कार भी इसके प्रेस में जाने से कुछ दिन पहले से ही हो सका। " [३]

"राग-दरबारी" क्यों लिखा गया ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए श्रीलाल शुक्ल जी ने लिखा है —

" इसके पीछे दो तत्व काफी सक्रिय थे। पहला, अपने ग्रामजीवन के प्रति जिसे मैं भारतीय जीवन की प्रमुख धारा मानता हूँ। मेरा अतिशय लगाव और दूसरा, हिन्दी ग्रामीण जीवन के प्रति बनी या बनाती हुई रूढ़ियाँ जो मेरे लिए बरदाश्त के बाहर है। " [४]

ग्रामीण जीवन के प्रति हिन्दी साहित्य में दो प्रकार के दृष्टिकोण प्रकृति की ओर प्रत्यावर्तन के नारे पर आधारित स्वच्छंदतावादी या रोमैंटिक है। वह गाँवों से भावुकतामय प्रेम करनेवाला, "ले चल मुझे भुलावा देकर" वाला नजरिया है। दूसरा दृष्टिकोण ग्रामीण समस्याओं को शोषक और शोषित वर्ग के विभाजन के आधारपर देखता है। इन दोनों ही दृष्टिकोणों में लेखक को अतिवादिता दिखाई पड़ी। इन समाधानों से असंतुष्ट होकर अपना उपन्यास लेखक ने लिखा है। इसे प्रचलित अर्थों में आंचलिक भले ही न कहा जा सके लेकिन यथार्थवादी तो यह निश्चित रूप से है। सम्पूर्ण ग्रामजीवन सामंतवाद के नूतन संस्करण से रोगग्रस्त है। जन-जीवन में कोई सक्रियता नहीं है। उनकी प्रगति अवरुद्ध है, सक्रिय है वे स्वार्थी तत्व, उन्होंने प्रजा तांत्रिक व्यवस्था को अपनी सुविधाओं प्राप्ति का माध्यम बना लिया है। सम्पूर्ण चित्र निराशाजनक है, उपन्यास में कोई सन्देश नहीं दिया गया है। लेकिन उपन्यासकार का संदेश ध्वनित होता है।

ऊपरलिखित दो तत्वों की पुष्टि के लिए श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" यह उपन्यास लिखा।

<u>शीर्षक</u> :-

"राग-दरबारी" उपन्यास का शीर्षक श्रीलाल शुक्ल को बहुत देर से याद हुआ। स्पष्ट है कि, उन्होंने इस विषय में बहुत सोचविचार किया होगा। शीर्षक का कथावस्तु, कथ्य अथवा पात्रों से संबंधित होना अत्यावश्यक है।

शीर्षक के संबंध में श्रीलाल शुक्ल जी का वक्तव्य ध्यातव्य हैं —

" किताब पढ़कर कोई भी देख सकता है कि संगीत से इसका कोई सरोकार नहीं है और शायद मेरा समीक्षक भी जानता है कि यह राग उस दरबार का है जिसमें हम देश की आजादी के बाद और उसके बावजूद, आहत, अपंग की तरह डाल दिए गए है या पड़े हुए है। " [5]

इसप्रकार वर्तमानकालिन दरबारी संस्कृति ने हमारी प्रगती को कुंठित कर भ्रष्टाचार का घिनौना परमात्मा तैयार किया है जिसका जल स्वतंत्र भारत की भव्य इमारत को जर्जर कर रहा है। इस दरबारी - संस्कृति के दुष्परिणमोंका व्यंग्यात्मक वर्णन प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य है। अत: शीर्षक की सार्थकता स्वयंसिध्द है।

"राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु शिवपालगंज नामक एक गाँव में घटित होती है, जो शहर से पन्द्रह मील की दूरी पर है। उपन्यास के सभी घटनाचक्रों के जन्मदाता वैद्यजी एवं उनके प्रतिद्वन्दी बाबु रामाधीन भीखमखेड़वी है। गाँव इन दोनों नेताओंका निगत एवं वर्तमान स्वार्थलीला से परिपूर्ण है। दोनों अपने साम्राज्य को फैलाने में दत्तचित्र है। प्रजातंत्र उनके लिए सुविधाओं का उन्मुक्त द्वार है, दोनों "लुटो रे भाई" के अंदाज में अपना घर भरने में तल्लीन है। वैद्यजी को आपरेटिव युनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर छंगामल इंटरमिडिएट कालेज के मैनेजर है। धूर्तता से वे अपने अपद नौकर सनीचर को पंचायत का प्रधान बनवाकर अनुदानों को हथिया लेते है। इन दोनों नेताओं की आपसी टकराहटों तथा इंटर कालेज की अनियमितताओं के वर्णन द्वारा इस उपन्यास की कथावस्तु निर्मित हुई है।

कथानक में काल्पनिक, अस्वाभाविक एवं गढ़ा हुआ कुछ भी नहीं है। देश की पतनावस्था का यह यथार्थ चित्र हँसा हँसा कर बेहाल करने के लिए नहीं है, बल्कि वह हमें विषाद से भरकर चिंतन के लिए बाध्य करता हैं।

अत: "राग-दरबारी" श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित एक सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है, जो शिवपालगंज का ही नहीं बल्कि भारत देश की विविध समस्याओंका

लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। यह व्यंग्य-विधा की एक उन्नायक कृति है।

निष्कर्ष :-

इसप्रकार श्रीलाल शुक्ल वर्तमान काल के सफल व्यंग्यकार माने जाते है। वर्तमानकालीन व्यंग्यकारों में श्रीलाल शुक्ल जी को महत्वपूर्ण स्थान है। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का अध्ययन युग-चेतना के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और शिल्पगत चेतना के अतर्गत अलग-अलग किया जाय तो अनुचित न होगा। उनके व्यक्तित्व और साहित्य में चपला-सी चमक है। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य में है। शुक्ल जी ने वर्तमानकालीन सामाजिक स्थिति को अपने साहित्य का विषय बनाया। अपने साहित्यिक जगत् में व्यंग्य का सहारा लेकर - विविध सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियोंका चित्रण किया।

श्रीलाल शुक्ल जी का साहित्य निरंतर ही हिन्दी साहित्य को प्रभावित करता रहेगा।

संदर्भ - सूची :-

१) श्रीलाल शुक्ल — "गर्दिश के दिन" शीर्षक स्तंभ में (पत्रिका - सारिका - अगस्त, १९७५३)।

२) डॉ॰ सरजूप्रसाद मिश्र — "हिन्दी के सात उपन्यास" - पृ॰ १०७।

३) — वही — - पृ॰ १०८।

४) — वही — - पृ॰ १०८।

५) — वही — - पृ॰ १०९।

.....